• बाल कविताएं...

प्यासा कौआ...

आसमान में परेशान-सा
कौआ उड़ता जाता था।
बड़े जोर की प्यास लगी थी
पानी कहीं न पाता था।
उड़ते-उड़ते उसने देखा
एक जगह पर एक घड़ा,
सोचा अन्दर पानी होगा,
जल्दी-जल्दी वह उतरा।
उसने चोंच घड़े में डाली
पी न सका लेकिन पानी,
पानी था अन्दर, पर थोड़ा
हार न कौए ने मानी।
उठा चोंच सें कंकड़ लाया,
डाल दिया उसको अन्दर,
बड़े गौर से उसने देखा
पानी उठता कुछ ऊपर।
फिर तो कंकड़ पर कंकड़ ला
डाले उसने अन्दर को
धीरे-धीरे उठता-उठता
पानी आया ऊपर को।
बैठ घड़े के मुंह पर अपनी
प्यास बुझाई कौए ने।
मुश्किल में मत हिम्मत हारो
बात सिखाई कौए ने ।
हरिवंशराय बच्चन

■ हरिवंशराय बच्चन

• चुटकुले...

डॉक्टर– मोटापे का एक ही इलाज है।
पप्पू– क्या डॉक्टर?
डॉक्टर– तुम रोज एक रोटी खाओ।
पप्पू– ये एक रोटी खाने के बाद खानी है या खाने से पहले? डॉक्टर साहब बेहोश।

मास्टर जी– पप्पू, तुम्हारे प?ास के दादाजी आजकल दिखाई नहीं दे रहे हैं?
पप्पू– सर वो गुजर गए...
मास्टर जी– अरे, क्या हुआ था उन्हें?
पप्पू– वो टीवी पर योग सीखाने वाले बाबा को देखकर योगा कर रहे थे...
मास्टर जी– अच्छा, फिर
पप्पू– बाबा ने निर्देश दिया गहरी सांस अंदर लो और जब मैं कहूं तब बाहर छोड़ना...
मास्टर जी– अच्छा फिर?
पप्पू– फिर क्या अचानक लाइट चली गई और तीन घंटे बाद जब लाइट आई तब तक दादाजी चल बसे थे...

• जानकारी...

चीन की दीवार

चीन की सबसे लंबी दीवार की बात जब भी आती है तो बच्चे-बच्चे की जुबान पर ग्रेट वॉल ऑफ चाइना का नाम आता है। दुनिया के सात अजूबों में शामिल इस दीवार को देखने दुनियाभर से पर्यटक जाते हैं। इस दीवार को पूरा होने में सैंकड़ों साल लग गए थे, वहीं इसकी कल्पना किन शी हुआंग ने की थी. समय-समय पर इसका विस्तार होता गया और फिर 16वीं शताब्दी में ये दीवार 21,196.18 किलोमीटर तक बन गई। इस दीवार का स्ट्रक्चर भी बहुत अजीब है। ये सीधी-सीधी न होकर बहुत आढ़ी तेढ़ी है। कई चीनी लोग बताते हैं कि इस वॉल को ड्रैगन ने रास्ता दिखाया था, लेकिन इसके पीछे की असल सच्चाई क्या है? चलिए जानते हैं।

आपने अमूमन किसी दीवार को देखा होगा तो वो सीधी ही देखी होगी, दीवारें बनाई ही सीधी जाती हैं, लेकिन चीन की दीवार काफी घुमावदार और टेढ़ी-मेढ़ी है। बता दें कि कुछ लोग इसके डिजाइन की तुलना एक ड्रैगन से करते हैं। चीनी मिथक हैं कि एक ड्रैगन ने इस दीवार का रास्ता दिखाया था। माना जाता है कि मजदूर ड्रैगन के पीछे-पीछे चले और उसके अनुसार दीवार का काम जारी रखा गया। हालांकि ये मिथक मात्र हैं, इसमें सच्चाई कितनी है ये किसी को नहीं पता।

चीन की द ग्रेट वॉल ऑफ चाइना को हाथों से बनाया गया है। रिपोर्ट्स के अनुसार, सम्राट के सैनिक आम लोगों को घेरकर उनसे काम करवाया करते थे। इस दौरान हजारों लोग दिन-रात इस दीवार को बनाने का काम करते थे। ऐसे में यदि कोई मजदूर भागने की कोशिश भी करता तो उसे वहीं जिंदा दफना दिया जाता था। वहीं ठीक से काम न करने वाले मजदूर का भी यही हाल होता था। इस दीवार के कुछ हिस्सों के नीचा पुरातत्वविदों को मानव अवशेष मिले हैं।

कुछ आंकड़े बताते हैं लगभग 2 हजार सालों तक इस दीवार को बनाने का काम चला। इस दौरान 4,00,000 से 10,00,000 लोगों की मौत हो गई थी। कहा जाता है कि इन लोगों को दीवार के किनारे ही दफना दिया गया था। यही वजह है कि चीन की महान दीवार को इतिहास का सबसे लंबा कब्रिस्तान भी कहते हैं।

• मणिपुरी लोक-कथा

काबुई का जादू

मणिपुर के आदिवासी कबीले में काबुई नामक युवक रहता था। वह मनचाहे रूप बदलने में चतुर था। दिन में वह आदमी के वेष में रहता था, किंतु शाम होते ही किसी भी जंगली पशु के रूप में बदल जाता।

एक शाम उसने जंगली भैंसे का रूप धारण किया और शिकार की तलाश में चल पड़ा। एक बुढ़िया जंगल से लकड़ी काटकर लौट रही थी। वह दबे पाँव उसके पास पहुँचा और बोला, 'आज मैं तुझे खाकर ही भूख मिटऊँगा।'

बुढ़िया के तो होश ही उड़ गए। अचानक उसे जान बचाने की तरकीब सूझ गई। मुँह बनाकर बोली, 'खाना है तो खा लो पर मुझमें वह स्वाद कहाँ, जो थाबाटन में होगा।'

काबुई चौंका। गरजकर पूछा, 'थाबाटन कौन है?'

'वह सात भाइयों की अकेली बहन है। अच्छा भरा हुआ शरीर है, कितना ताजा मांस है?' बुढ़िया बोली।

काबुई ने बुढ़िया से वादा किया कि थाबाटन का पता पाने पर वह उसे छोड़ देगा।

बुढ़िया ने उसे बताया कि थाबाटन के भाई उसे कमरे में बंद कर जाते हैं। जब बाहर से भाई संकेत करते हैं, तभी वह दरवाजा खोलती है अन्यथा वह बाहर नहीं निकलती।

'कैसा संकेत?! काबुई ने पूछा। बुढ़िया ने उत्तर दिया, 'मैं एक दिन वहाँ से गुजर रही थी तो मैंने उनकी बातचीत सुनी थी। वह बहन से कह रहे थे जब हम कहें-

'प्यारी बहना, हम आए हैं।
तेरी ही माँ के जाए हैं।
तभी तू द्वार खोलना।'

काबुई उस संकेत को पाकर खुश हुआ। बुढ़िया उसे थाबाटन का घर दिखाकर लौट गई।

काबुई अपनी आवाज बदलना भूल गया। अपनी कठोर आवाज में उसने संकेत वाक्य दोहराया। थाबाटन जान गई कि यह आवाज उसके भाईयों की नहीं है। उसने दरवाजा खोलने से मना कर दिया।

काबुई गुस्से से भरा हुआ बुढ़िया के पास पहुँचा। जैसे ही वह उसे खाने लगा। चालाक बुढ़िया ने कहा- 'चलो, मैं साथ चलकर दरवाजा खुलवाती हूँ।'

बुढ़िया ने ठीक भाईयों जैसी आवाज में पुकारा।

इस बार थाबाटन धोखा खा गई। उसने दरवाजा खोल दिया। अजनबी काबुई को देखकर वह घबरा गई। काबुई ने उसकी सुंदरता देखी तो उसे खाने का निश्चय त्याग दिया।

-जारी

बुढ़िया के तो होश ही उड़ गए। अचानक उसे जान बचाने की तरकीब सूझ गई। मुँह बनाकर बोली, 'खाना है तो खा लो पर मुझमें वह स्वाद कहाँ, जो थाबाटन में होगा।' काबुई चौंका। गरजकर पूछा, 'थाबाटन कौन है?'

'वह सात भाइयों की अकेली बहन है। अच्छा भरा हुआ शरीर है, कितना ताजा मांस है?' बुढ़िया बोली।
काबुई ने बुढ़िया से वादा किया कि थाबाटन का पता पाने पर वह उसे छोड़ देगा...

• रोचक...

हृदय रोग

हमारे देश में सबसे ज्यादा लोग हृदय रोग के चलते जान गंवाते हैं। हर साल इस रोग के चलते बड़ी संख्या में लोगों की मौत होती है। देश में सबसे ज्यादा मौतें हार्ट अटैक के चलते होती हैं। वहीं कोरोना महामारी के बाद इनमें वृद्धि देखी गई है। हृदय संबंधी बीमारियों के जोखिम के कारणों में उच्च रक्तचाप, उच्च कोलेस्ट्रॉल, मोटापा, धूम्रपान और शारीरिक गतिविधि की कमी शामिल हैं। कोरोना वायरस के बाद हार्ट अटैक के मामलो में खासी वृद्धि हुई है। कोविड-19 के बाद जवान से लेकर बच्चों तक में हार्ट अटैक के मामले देखे जा रहे हैं और ज्यादातर मामलों में लोगों की मौत हो जाती है। एनसीआरबी की रिपोर्ट के मुताबिक 2021 की तुलना में 2022 में दिल के दौरे से होने वाली मौतों की संख्या में 12.5 प्रतिशत की बढ़ोतरी दर्ज की गई थी। इस साल हार्ट अटैक से 32,457 लोगों की मौत हुई थी।

• राष्ट्रीय ध्वज...

भारतीय ध्वज संहिता के अनुच्छेद 2.2 के अनुसार, कोई भी आम नागरिक अपने घर पर राष्ट्रीय ध्वज फहरा सकता है। हालांकि, जब भी राष्ट्रीय ध्वज प्रदर्शित होता है, तो उसे सम्मान की स्थिति में होना चाहिए और स्पष्ट रूप से रखा जाना चाहिए। नियमों के मुताबिक, जब भी राष्ट्रीय ध्वज प्रदर्शित किया जाए, तो उसे पूरा सम्मान दिया जाना चाहिए। उसे उचित स्थान पर रखा जाना चाहिए। यानी कि ध्वज को जमीन पर या गंदी जगह पर नहीं रखा जाना चाहिए। इसके अलावा फटा या मैला-कुचैला ध्वज प्रदर्शित नहीं किया जाना चाहिए।